

पुराने पेड़ की बातें

शरद जोशी

तभी एकाएक पेड़ से आवाज़ आई, “साहित्य समाज का दर्पण है।”

सब चौंक पड़े। होस्टल की मेस से खाना खाने के बाद टहलने निकल गए थे। चाँदनी रात। शहर की ओर जाने वाली सड़क विशेष अच्छी लगती थी, चाँदी की लकीर की तरह। हवा में पेड़ ऐसे झूमते जैसे कव्वाली की धुन पर तालियाँ बजा रहे हों: जिस विषय पर बातें चल रही थीं, वह खाना खाने के पूर्व छिड़ गया था - एक सद्य-प्रकाशित उपन्यास को लेकर बहस इतनी बढ़ गई कि साहनी चीखकर बोला, “आखिर साहित्य क्या है?”

तभी सड़क के किनारे के पुराने पेड़ ने कहा, “साहित्य समाज का दर्पण है।”

हमने चारों ओर देखा, उत्तर देने वाला कोई व्यक्ति नहीं। पेड़ के पीछे या पेड़ के ऊपर कोई नहीं था।

साहस करके गुप्ता ने कहा, “कौन है वहाँ?”

कोई जवाब नहीं है। लगता था, किसी भुतहा कहानी की शुरुआत हो रही है।

“भूत है रे यहाँ!”

और तेज़ी-से हम सब एक ओर

भाग लिए कि पुलिया पर जा दम लिया। लगभग आधा घण्टा पेड़ के जादू पर सोचते रहे और फिर साहस कर वापस पेड़ के निकट आए। साहनी ने ज़ोर-से कहा, “आखिर साहित्य क्या है?”

और पेड़ से गम्भीर वाणी सुनाई दी, “साहित्य समाज का दर्पण है।” सब आश्चर्य से एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

“नई कविता क्या है?” वर्मा ने कहा।

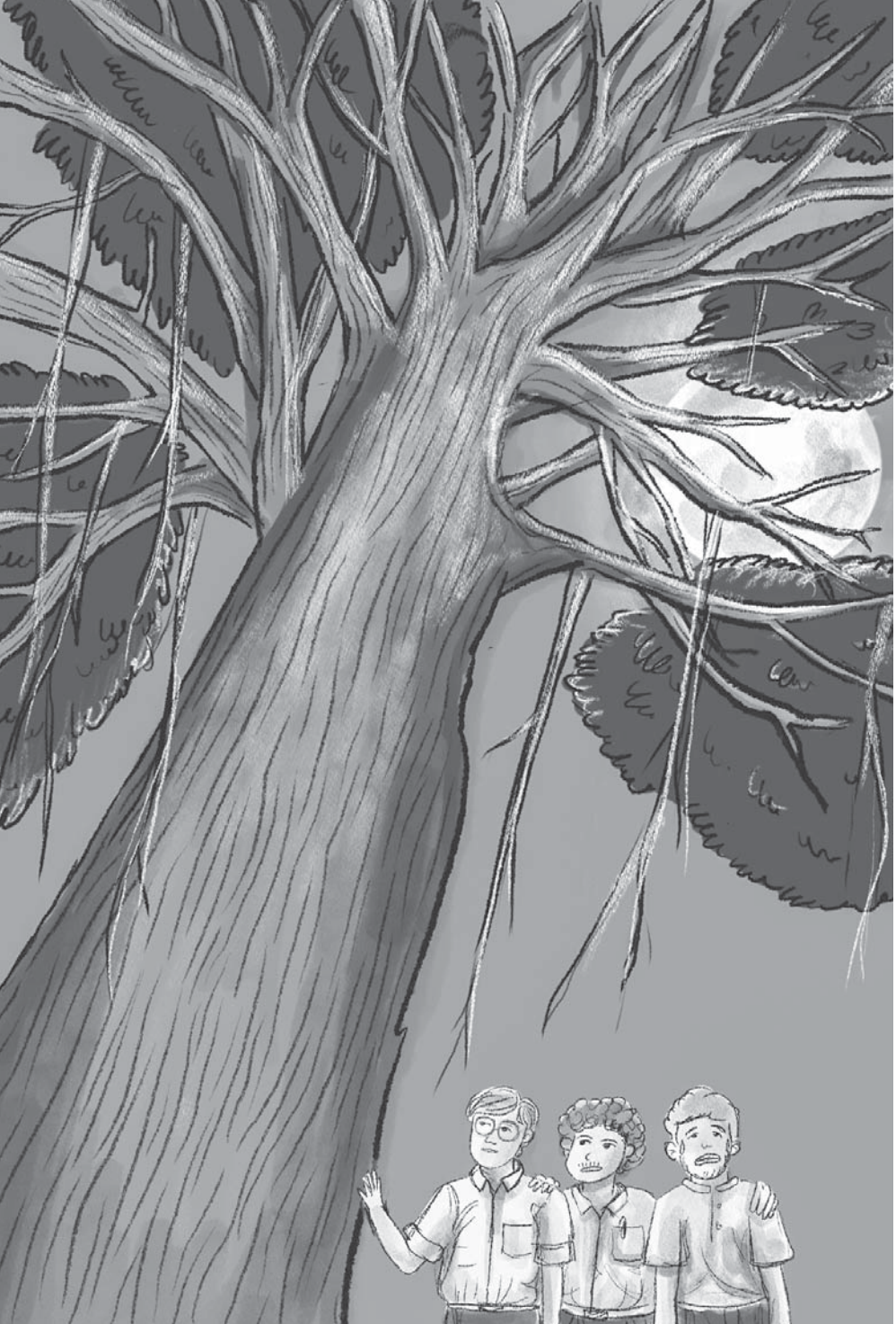
“ऊँ... !” और पेड़ निरुत्तर हो गया। कुछ देर हमने प्रतीक्षा की पर वह चुप रहा।

“काव्य क्या है?”

“वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्!” गम्भीर उद्घोष हुआ।

जब कॉलेज में यह अनुभव सुनाए गए तो सब हँसे। किसी ने मूर्ख कहा, किसी ने डाँटा। जहाँ जाते, स्वागत में ठहाके लगते कि ये आए पेड़ से आवाज़ें सुनने वाले!

विश्वविद्यालय प्रेस के अधीक्षक शर्माजी अपने को बड़ा साइंटिस्ट बताते हैं। खबर उन तक भी पहुँच गई, तो रात को वे होस्टल आए और कहने लगे, “बताइए, कौन-से पेड़ से



आवाज़ आती है, मैं अभी भूत भगाता हूँ।”

हम उन्हें पेड़ तक ले गए। प्रश्न किया, “काव्य क्या है?” और उत्तर मिला, “वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्।” शर्माजी ने चिल्लाकर कहा, “कौन हो तुम बोलने वाले?”

कोई उत्तर नहीं आया।

“और कुछ प्रश्न पूछो भाई इससे।”

“प्रगतिवाद क्या है?”

“हिन्दी की नवीनतम प्रवृत्ति।”
आवाज़ आई।

पुराना खूबसूरत पेड़ था। प्रगतिवाद को नवीनतम प्रवृत्ति कहने वाला!

“और प्रयोगवाद क्या है?”

“ऊँSSS...” पेड़ इतना कहकर चुप हो गया।

“छायावाद क्या है?”

“स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह।”
उत्तर मिला।

शर्माजी हैरान खड़े इस अलौकिक वार्तालाप को सुन रहे थे। कहने लगे, “बिलकुल अजीब बात है कि पेड़ बोलता है। मैं इस पेड़ को बरसों से जानता हूँ। यूनिवर्सिटी प्रेस जब नई इमारत में नहीं गया था और सामने के इस मकान में था, तब से” फिर सोचते हुए कहने लगे, “बात तो कुछ विचित्र होगी पर ऐसा हो सकता है कि किसी रासायनिक प्रक्रिया के अन्तर्गत पेड़ विद्वान हो गया हो।”

“क्या मतलब?”

“पहले इस पेड़ के पास एक गड़ढा था जिसमें हमारे प्रेस के रद्दी कागज़, प्रूफ आदि डाल दिए जाते थे। कुछ थीसिस और हिन्दी साहित्य का इतिहास, जो उस समय छपे थे, इस पेड़ की जड़ में पड़े हैं और यह पेड़ विद्वान हो गया।”

“पर इससे आवाज़ क्यों आती है?”

“पेट में किताब पड़ी है तो मुँह से आवाज़ तो निकलेगी ही। विद्वान है तो बोलेगा ज़रूर। चुप थोड़े रहेगा!”
गुप्ता ने समाधान किया।

पेड़ से एक प्रश्न और पूछा, “हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कृति कौन-सी है?”

उत्तर मिला, “कामायनी।”

“सर्वश्रेष्ठ नाटककार कौन है?”

“भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।”

“उनके बाद?”

“प्रसादजी।”

“उनके बाद?”

“ऊँSSS...!” पेड़ चुप हो गया।

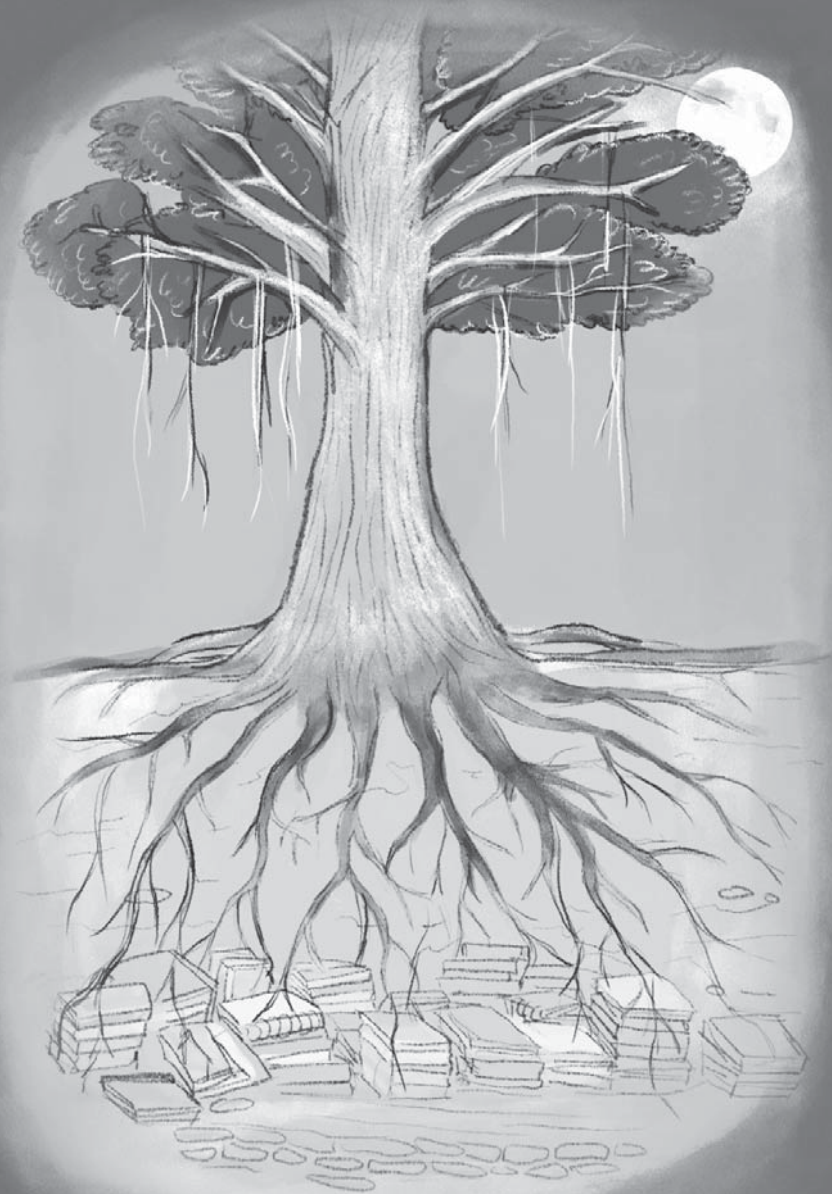
“प्रेमचन्दजी के विषय में क्या जानते हैं?”

“वे ग्राम-जीवन के चतुर चितेरा थे।”

“सूर और तुलसी में कौन श्रेष्ठ है?”

“सूर तूर, तुलसी ससी, उड़गन केसवदास। अब के कवि खद्योत सम जँह-तँह करत प्रकास।”

“डब्ल्यू.एच. ऑडेन का नाम सुना है?”



“ऊँ...SSS !” कहकर पेड़ चुप हो गया।

अब यह निश्चित हो गया था कि क्लासिक ढंग के प्रश्न पूछिए, क्लासिक उत्तर मिलेंगे। नई समस्या पर पूछेंगे, पेड़ चुप हो जाएगा। शर्माजी का विश्लेषण ठीक था। पेड़ की जड़ में पुरानी थीसिसें पड़ी हैं, जिनका रस पीकर पेड़ विद्वत्ता-भरे उत्तर देता है।

कुछ दिनों बाद हम सबने यह निश्चय किया कि पेड़ को वैचारिक रूप से अप-टू-डेट किया जाए। कुछ नई पुस्तकें इकट्ठी की गईं। सभी नए साहित्य पर थीं। स्वयं शर्माजी ने पेड़ के आसपास एक-एक फुट गहरा गड्ढा किया और उसमें वे किताबें रख दी गईं। नई थीसिस की पुस्तकों की खाद से पेड़ विद्वान हो जाता है, यह बात सिद्ध हो जाती तो विज्ञान जगत में शर्माजी का भी आठ-दस इंच स्थान हो जाता।

दूसरे रोज़ हमने आकर पेड़ से प्रश्न किए परन्तु कोई उत्तर नहीं मिला। निश्चित था कि पेड़ इस समय मनन कर रहा था और क्लासिक प्रश्नों के उत्तर देने के मूड में नहीं था। तीसरे-चौथे रोज़ भी यही रहा। हमें डर लगा कि पेड़ सदैव के लिए चुप न हो जाए।

“शर्माजी, नए साहित्य के संसर्ग में आकर पेड़ की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई है। वह मौन हो गया है। अच्छा यही है कि नई पुस्तकें वापस निकाल

लें ताकि कम-से-कम उत्तर सुनने का चमत्कार तो नष्ट न हो।”

रात को शर्माजी के नेतृत्व में कुदाली लेकर पेड़ के पास जब पहुँचे तो देखकर स्न्न रह गए कि पेड़ नीचे गिरा हुआ था। हमें दुख हुआ – जैसे हमने पेड़ की हत्या कर दी हो।

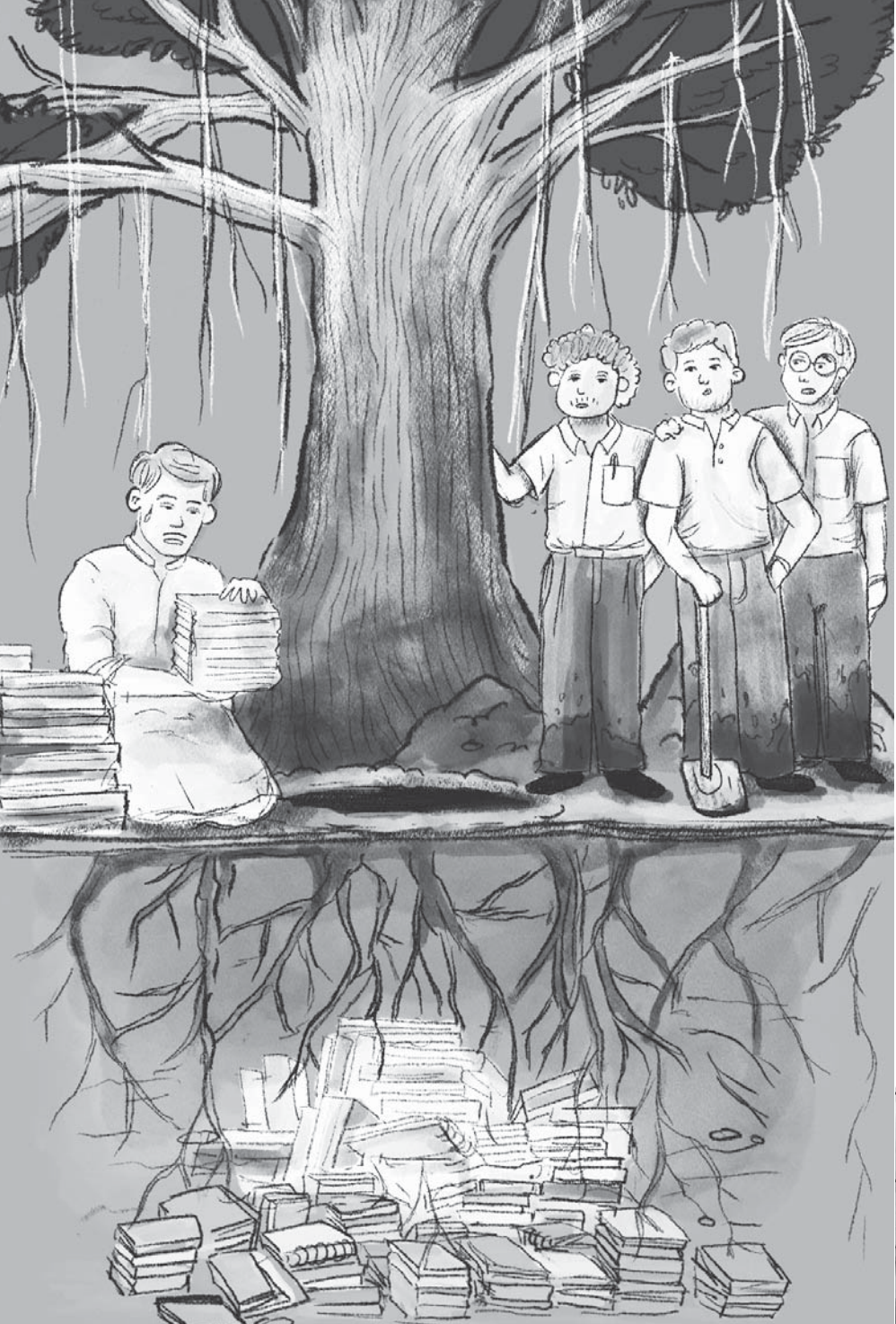
वर्मा ने कहा, “इस बूढ़े पेड़ के सम्पर्क में नया साहित्य नहीं आना चाहिए था। बेचारे से पचा नहीं और शॉक लग गया। हम सब इसके हत्यारे हैं।”

संगीत के प्रेमी पेड़ तो बहुत-से हैं जो गीत सुनकर विकसित होते हैं, साहित्य का प्रेमी वृक्ष एक यही था जो धराशायी हो गया।

हम सब वापस लौट आए – सिर झुकाए हुए।

माहभर बाद जब हमारे हिन्दी के ‘हेड ऑफ द डिपार्टमेण्ट’ जो उन दिनों छुट्टी पर थे, वापस लौटे तो हमने सारा किस्सा सुनाया। शुरु में आश्चर्य हुआ पर बाद में आपने स्वीकार किया कि ऐसी दैविक शक्ति हो सकती है और वृक्ष भी ऐसे उत्तर दे सकता है।

साहनी ने हँसकर कहा, “सर, बड़े क्लासिक उत्तर देता था वह पेड़। हमने पूछा कि ‘सर्वश्रेष्ठ नाटककार कौन है’ तो बोला, ‘भारतेन्दु हरिश्चन्द्र’ पूछा कि ‘काव्य क्या है’ तो कहता था, ‘वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्’ हमने पूछा, ‘प्रगतिवाद क्या



हैं तो कहने लगा, 'हिन्दी की नवीनतम प्रवृत्ति' सुनकर बड़ी हँसी आती थी।"

"इसमें गलत क्या बोला वह?" हेड ऑफ द डिपार्टमेंट ने कहा, "ठीक ही तो है। प्रगतिवाद हिन्दी की नवीनतम प्रवृत्ति ही तो है। काव्य की सर्वश्रेष्ठ परिभाषा पण्डितराज जगन्नाथ की ही है।"

"और प्रयोग...!" पर साहनी अधूरे में रुक गया।

"ऊँ...SSS!" हेड ऑफ द डिपार्टमेंट

ने कहा और फिर जाने क्या सोचते चुप हो गए।

हम सब उनके कक्ष से बाहर चले आए। उस शाम हमने कसम खाई कि हेड ऑफ द डिपार्टमेंट से नए साहित्य पर कभी चर्चा नहीं करेंगे, उन्हें कोई पुस्तक नहीं देंगे, प्रश्न नहीं उठाएँगे। उनकी दीर्घायु की कामना करते हुए हमने यह निश्चय किया था।

एक पेड़ मर गया था, दूसरा पेड़ मरने नहीं देंगे।

शरद जोशी (1931-1991): भारतीय कवि, लेखक, व्यंग्यकार और हिन्दी फिल्मों व टेलीविज़न के संवाद एवं पटकथा लेखक थे। राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विषयों पर अनेक व्यंग्यात्मक निबन्ध लिखे हैं। उन्हें वर्ष 1990 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

सभी चित्र: अदिति दीक्षित: दिल्ली में स्थित लेखिका, फिल्म निर्माता, चित्रकार और स्टॉप मोशन एनिमेटर हैं। उनकी स्टॉप मोशन शॉर्ट फिल्म *डेज़ी* वर्तमान में दुनियाभर में 25 से अधिक फेस्टिवल में नामांकित हुई है और उसे 6 फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ छात्र स्टॉप मोशन शॉर्ट फिल्म का पुरस्कार दिया गया है। उन्होंने भारत की पहली वयस्क एनिमेटेड व्यंग्य शृंखला *आपकी पूजिता* के दो एपिसोड भी लिखे और निर्देशित किए हैं।

